REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचार

अरुण कुमार[1] , डॉ. के. के. शर्मा[2]
[1]शोध छात्र, इतिहास, एम.एम.मोदी पी.जी. कॉलेज, मोदीनगर.
[2]एसो. प्रोफेसर, इतिहास, एम.एम.मोदी पी.जी. कॉलेज, मोदीनगर.

प्रस्तावना

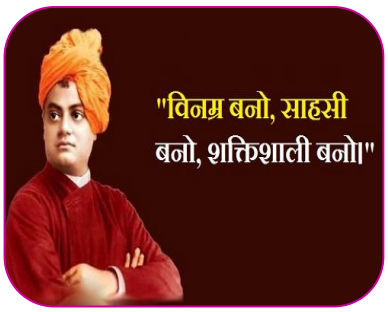

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारतीय दार्शनिकों में प्रमख स्थान रखते है। इन्होंने वेदान्त दर्शन को व्यवहारिक बनाने के साथ ही उसे सामान्य मनुष्य तक पहुंचाने का प्रयास किया। इस दर्शन को पश्चिमी जगत के समक्ष रखने का प्रयास किया। वैदिक दर्शन के प्रति मिथ्या आरोपों को निर्मूल सिद्ध करने के लिए विवेकानन्द ने तर्कीय विधि का उपयोग भी किया है। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि वेदान्त दर्शन बुद्धि विलास का विषय नही है अपितु वह एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। यह दर्शन एक देश एवं काल के लिए नहीं है, इसके आधार पर एक सार्वभौमिक जीवन पद्धति का निर्माण किया जा सकता है।[1] इस दर्शन में मानव जीवन के वे शाश्वत् मूल्य निहित है जो हमारे जीवन को प्रत्येक प्रकार की विभीषिका से उबारने में सक्षम है। स्वामी विवेकानन्द ने वैदिक दर्शन एवं धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए जीवन भर प्रयास किया। विवेकानन्द वेदांत दर्शन की एक नवीन व्याख्या करते प्रतीत होते है। उन्होंने अपने जीवन काल में वेदांन्त दर्शन का समुचित अध्ययन करके सामान्य बुद्धि के लिए सुलभ कराकर उसे जीवन से जोड़ने का प्रयत्न किया है। उन्होंने वेदान्त के गूढ़तम सिद्धान्तों को जितने सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया किसी अन्य समकालीन दार्शनिक ने नहीं किया।[2] उन्होंने माना है कि वेदांत शुष्क तत्व मीमांसीय सिद्धान्तों का जमघट मात्र नहीं है वरन् यह सरलतम् जीवन दर्शन है। जिसकों सामान्य व्यक्ति भी जीवन में उतार सकता है। 1893 ई. में पश्चिमी देशों में वेदान्त दर्शन से प्रभावित करने वाले वे पहले व्यक्ति थे।[3] उन्होंने पश्चिम की भौतिकवादी जनता के सम्मुख भारत के अध्यात्मवाद का महानतम् आदर्श प्रस्तुत करके अपने देश की वास्तविक चिन्तनधारा का चित्र प्रस्तुत किया। स्वामीजी ने वेदांन्त की युक्ति संगत विज्ञान सम्मत, व्यवहारानुकूल व्याख्या की। विवेकानन्द का मानना है कि वेदान्त दीप से दरिद्र की कुटी प्रकाशित हो सकती है। स्वामीजी के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को छोटे से छोटे कार्य निष्कपट भाव से करना चाहिए। स्वामी जीने वेदान्त को अधिक व्यवहारिक बनाने के लिए उसकी प्रवृत्तिपरक व्याख्या की है। उन्होंने कहा वेदान्त गृहस्थावस्था के कार्य छोड़ने के उपदेश नहीं देता । वेदान्त के आदर्श को नगरों के कोलाहल के मध्य भी प्राप्त किया जा सकता हैं स्वामी की प्रवृत्ति परक वेदान्त की व्याख्या नवीन है। उन्होंने द्वैत, विशिष्ट द्वैत आदि सम्प्रदायों के चिन्तन के विकास की एक सीढ़ी बतलाकर उनसे अद्वैत का समन्वय स्थापित किया है। स्वामी के अनुसार वेदान्त में योगी, मूर्तिपूजक, नास्तिक सभी के लिए स्थान है। उसमें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सभी एक है। जंगल में समाधि प्रणायाम अनुष्ठान को स्वामी जी ने निरर्थक बताया है। यद्यपि यह सच है कि आदर्श प्राप्ति के लिए चित शुद्धी की आवश्यकता है, परन्तु चित शुद्धी नाक दबाकर प्रणायाम कर लेने मात्र से नही होगी। जितने भी जीव जन्तु हैं, वे सभी परमात्मा के रूप और ब्रह्म रूप है। अतः भगवान को इन दुःखी, दरिद्र और असहाय प्राणियों में ढूढ़ने चाहिए। स्वामी जी का यह मत वेदान्त को व्यवहारवादी और समाजवादी दृष्टिकोण से जोड़ देता है। वेदान्त को व्यक्तिवादी दर्शन से समाजोन्मुख बनाने का उनका यह दृष्टिकोण नवीनता लिये हुए है।

माया को स्वामी जी जगत की व्याख्या के लिए उपयुक्त नहीं मानते है। उनके अनुसार माया कोई सिद्धान्त विशेष न होकर जगत की स्थिति मात्र की बोधक है। उनके अनुसार केवल ब्रह्म का ही स्वतन्त्र अस्तित्व है। उन्होंने माया को ब्रह्म के ऊपर आश्रित बताया है।[4] ब्रह्म माया पर आश्रित नही है। इनके अनुसार वेदान्त एकता का नही अपितु अनेकता में एकता का प्रतिपादन करता है।[5] उन्होंने भक्ति के महत्व को स्वीकार किया है।। उन्होंने भक्ति के द्वैत भाव को समाप्त कर उसको अद्धैत भाव में परिणत कर दिया। स्वामी जी ने वेदांत तथा विज्ञान का सामजस्य स्थापित कर दिया। विवेकानन्द माना कि आत्मा अनन्त है, उसका कोई ओर छोर नहीं है। विवेकानन्द ने नैतिकता का अर्थ दूसरों की भलाई करना बताया। उनकी मान्यता है कि जब कोई दूसरे को हानि पहुंचाता है, तो वह स्वयं अपनी ही हानि करता है। उनके अनुसार विज्ञान और धर्म में केवल पद्धति का भेद है। वे धर्म को भी एक विज्ञान समझते है। उनके दर्शन के मूलाधारों को सरल रुप में निम्न प्रकार से समझा जा सकता है:–

(1) ब्रह्म तत्व विवेकानन्द ने भारतीय परम्परा में ब्रह्म को ही विश्व का चरम तत्व माना है। उनके अनुसार ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है।[6] सम्पूर्ण जगत ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति हैं वेदान्त का मूल सिद्धान्त यह एकत्व अखण्ड भाव है।

(2) ईश्वर तत्व[7] विवेकानन्द के अनुसार ईश्वर वह है जिससे विश्व का जन्म, स्थिति और प्रलय होता है। वह अनन्त, शुद्ध नित्य मुक्त, सर्वशक्तिमान, सर्वत्र परम कारूणिक, सर्वोपरी, प्रेमस्वरूप है। उनका मानना है कि ईश्वर एक वृत्त है, उसकी परिधि कही नही हैं, उसका केन्द्र सर्वत्र है। उस वृत्त में प्रत्येक बिन्दु सजीव, सचेतन, सक्रिय और समान रूप से क्रियाशील है। ईश्वर की तुलना में समस्त विश्व कुछ नहीं है। ईश्वर ही सृष्टि की उत्पत्ति, धारणा व विनाश करता है।

(3) आत्मा विचार [8] विवेकानन्द ने आत्मा को ब्राह्मण्ड की एक अनन्त सत्ता माना है। उनका मनना है कि हम भी वह है तुम भी वह हो, उसके अंश नहीं समग्र वही। आत्मा जगत में इसलिए आता है ताकि जगत का विकास हो सके। आत्मा कार्यकरण नियम से परे है, इसलिए उसमें समिश्रण नहीं है। किसी कारण का परिणाम नहीं है। अतएव वह नित्य मुक्त है। आत्मा अनादि एवं अनन्त है। आत्मा अपरिवर्तनशील वस्तु अमर शुद्ध सदा मंगलमय है। उच्चतम से लेकर निम्नतम सभी प्राणियों में उसी शुद्ध और पूर्ण आत्मा का अस्तित्व है।

(4) जगत विचार [9] विवेकानन्द के अनुसार जगत की सत्य कोटि में गणना नहीं कि जा सकती है। जगत का वास्तविक रूप अज्ञात है। यह भौतिक जगत मनुष्य की सीमित चेतना का परिणाम हैं जब मनुष्य अपने देवत्व को जान लेता है तो सब जड़–द्रव्य, सब प्रकृति, जैसा हम उसे जानते है समाप्त हो जाते है। उनके अनुसार यह जगत पूर्णतः असत् नहीं है। व्यवहारिक दृष्टिकोण से ही माया के समान जगत को भी अनिर्वचनीय कह सकते है। उनके अनुसार मन का स्थूल रूप ही जड़ है और जड़ का सूक्ष्म रूप मन है।

(5) मोक्ष प्राप्ति विचार स्वामी विवेकानन्द ने मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष या मुक्ति माना है। उनकी इस धारणा में अद्वैत वेदान्त से अनुकूलता है। वे मोक्ष को न तो संस्कार्य मानते है न ही प्राप्य। वे जीवन्मुक्ति को स्वीकार करते है। उनके अनुसार शुभ या अशुभ कर्मो के बन्धन से रहित हो जाना ही मुक्ति है। उनके अनुसार सत्य की उपलब्धि हो जाने पर तुरन्त मृत्यु नही हो जाती है।[10] उन्होंने आत्म साक्षात्कार को मानव जीवन का उद्देश्य माना हैं। वे आत्मा और ब्रह्म की एकता में विश्वास करते है। मनुष्य के रूप में ईश्वर सेवा को आदर्श मानते है। स्वामी विवेकानंद जी ने आजीवन लोगों को गीता से ही प्रभावित होकर के निष्काम कर्मयोग की शिक्षा दी। मद्रास में 'भारतीय जीवन में वेदान्त का प्रभाव' विषय पर दिये गए अपने व्याख्यान में यह श्लोक दोहराया है कि–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्माणि।।[11]

अर्थात् कर्म में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं, तुम इस भाव से कर्म मत करो, जिससे तुम्हें फल–भोग करना पड़े। तुम्हारी प्रवृत्ति कर्म त्याग करने की ओर न हो।[12] निश्चय ही विवेकानन्द महान अध्यात्मवादी, भारतीय संस्कृति के भक्त, दार्शनिक और नैतिकता के पुजारी थे। उनका वेदान्त दर्शन संसार भर के दार्शनिकों, चिन्तकों के विचारों में उत्कृष्ट है।

संदर्भ सूची

1. गंभीरानंद, स्वामी, द लाईफ ऑफ स्वामी विवेकानन्द बॉय हिज ईस्टर्न एंड वेस्टर्न डिसाइपल्स, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता, 1960, पेज 137
2. वही, पेज 119
3. उपाध्याय, आचार्य विष्णुदेव, आरण्यक और उपनिषद, आत्माराम ऐंड संस, दिल्ली, 1990, पेज 73
4. बर्के, मैरी लुईस, स्वामी विवेकानंद इन द वेस्ट : न्यू डिस्कवरीज, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता, 1997, पेज 283,
5. वही, पेज 291
6. विवेकानंद साहित्य, खंड तीन, अद्वैत आश्रम, कलकाता, 2014, पेज 29
7. वही, पेज 123–124
8. वही, पेज 11–13
9. विवेकानंद साहित्य, खंड चार, अद्वैत आश्रम, कलकाता, 2014, पेज 91
10. वही, पेज 94
11. श्रीमद्भगवत गीता, अध्याय 2, श्लोक 47
12. विवेकानंद साहित्य, खंड पाँच, अद्वैत आश्रम, कलकाता, 2014, पेज 142